D

(20325) (Pages 7)

Roll No.

B.A.-II Year (Pvt.)

NUS-4967

B.A. (Annual) Examination, 2025

HINDI

हिन्दी कथा साहित्य

(A-214)

(New Course)

Time : Three Hours] *[Maximum Marks : 50*

नोट : खण्ड **'अ'** लघु उत्तरीय प्रश्न में **एक** लघु उत्तरीय प्रश्न है, जिसके **दस** भाग हैं। **सभी** भागों के उत्तर दीजिये। खण्डों ब, स, द एवं इ विस्तृत उत्तरीय प्रश्न। सभी खण्डों से एक-एक प्रश्न का उत्तर दीजिए।

खण्ड-अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

1. (i) कहानी के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं 02

(ii) 'चित्रलेखा' कौन थी? 02

(iii) 'चित्रलेखा' की कथावस्तु का मूलाधार क्या है?02

(iv) अपने विवाह की बात सुनकर निर्मला पर उसका क्या प्रभाव पड़ा? 02

(v) 'निर्मला' उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ था और इसके लेखक कौन है? 02

(vi) नन्हकू सिंह गुण्डा क्यों हो गया? 02

(vii) 'यही सच है' कहानी का क्या दर्शन है? 02

(viii) चीफ की दावत से पूर्व शामनाथ की पत्नी का शृंगार कैसा था। 02

(ix) पच्चीस चौका डेढ सौ कहने का क्या तात्पर्य है 02

(x) अमरकान्त की प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए। 02

खण्ड-ब

2. (i) "यह याद रखना कि मनुष्य स्वतन्त्र विचारवाला प्राणी होते हुए भी परिस्थितियों का दास है यह परिस्थिति चक्र क्या है, पूर्व जन्म के कर्मों के फल का विधान है। मनुष्य की विजय वहीं सम्भव है, जहाँ वह परिस्थितियों के चक्र में पड़कर उसी के साथ चक्कर न खाए, वरन अपने कर्तव्य का विचार रखते हुए उस पर विजय पावें।" 4×2

अथवा

"चित्रलेखा! तुम भूलती हो। प्रेम का सम्बन्ध आत्मा से है प्रकृति से नहीं"। जिस वस्तु का प्रकृति से सम्बन्ध है, वह वासना है, क्योंकि वासना का सम्बन्ध बाह्य से है। वासना का लक्ष्य यह शरीर है, जिस पर प्रकृति ने कृपा करके उसको सुन्दर बनाया है। प्रेम आत्मा से होता है,शरीर से नहीं "परिवर्तन प्रकृति नियम है, आत्मा का नहीं। आत्मा का सम्बन्ध अमर है।

(ii) "बाबू उदयभानुलाल से मेरी पुरानी दोस्ती थी। आदमी नहीं, हीरा था। क्या दिल था, क्या हिम्मत थी, मेरा तो जैसे दाहिना हाथ ही कट गया। विश्वास मानिए, जब से यह खबर सुनी है, आँखों में अँधेरा सा छा गया है। खाने बैठता हूँ तो कौर मुँह में नहीं जाता। उसकी सूरत आँखों के सामने खड़ी रहती है। मुँह जूठा करके उठ आता हूँ। किसी काम में दिल नहीं लगता भाई के मरने का रंज भी इससे कम होगा।"

अथवा

"निर्मला का विवाह हो गया। ससुराल आ गई। वकील साहब का नाम था। मुंशी तोताराम साँवले रंग के मोटे ताजे आदमी थे। उम्र तो अभी चालीस से अधिक न थी, पर वकालत के कठिन परिश्रम ने सिर के बाल सफेद कर दिये थे।' व्यायाम करने का उन्हें अवकाश न मिलता था। यहाँ तक की कभी कहीं घूमने भी नहीं जाते, इसलिये तोंद निकल आई थी। देह के स्थूल होते हुए भी आए दिन कोई न कोई शिकायत बनी रहती थी। मन्दागिन और बवासीर से तो उनका चिरस्थायी सम्बन्ध था अतएव बहुत फूँक-फूँक कर कदम रखते थे।"

खण्ड-स

3. (i) "एक कामयाब पार्टी वह है जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाये। शामनाथ की पार्टी सफलता का शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई

रूकावट न थी।कोई अड़चन न थी, साहब को क्सिकी पसन्द आयी थी। मेम साहब को पर्दे पसन्द आये थे, सोफा कवर का डिजाइन पसन्द आया था, कमरे की सजावट पसन्द आयी थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए। साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर मे ही चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गये थे। दफ्तर में जितने रौब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्त प्रखर हो रहे थे" 4×2

अथवा

"एक अरमान उनके साथ ही चला गया था कि जगपती की सन्तान को चार बरस इन्तजार करने के बाद भी वे गोद में न खिला पाईं। और चन्दा ने मन में सब कर लिया था, यही सोचकर कि कुल देवता का अंश तो उसे जीवन भर पूजने को मिल गया था। घर में चारों तरफ जैसे उदारता बिखरी रहती अपनापन बरसता रहता। उसे लगता, जैसे घर की अँधेरी एकान्त कोठरियों में यह शान्त शीतलता है जो उसे भरमा लेती है"

(ii) "बालमन की यह खरोंच ग्रन्थि बन गई थी। जब भी पच्चीसवीं संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिता जी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिव नारायण मिश्रा का गाली गलौज करता लाल-लाल गुस्सैल चेहरा। दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अँधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे

अथवा

"चंदा के बिखरे बाल, जिनमें हाल के जन्में बच्चे के गुयआरे बालों की सी महक दूध की कंचा दूध शरीर के रस की सी मिठास और स्नेह सी चिकनाहट और वह माथा जिस बालों के पास तमाम छोटे-छोटे, नरम,नरम से रोएँ रेशम से और उस पर कभी लगाई गई बिन्दी का हल्का मिटा हुआ सा आभास नन्हें नन्हें निर्द्वन्द सोए पलक और उनकी मासूम सी काँटों की तरह बरोनियाँ और साँस में घुलकर आती वह आत्मा की निष्कपट आवाज की लय, फूल की पँखूरी से पतले ओंठ उन पर पड़ी अछूती रेखाएँ, जिनमें सिर्फ दूध सी महक"

खण्ड-द

4. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए- 7×1

(i) 'चित्रलेखा' का परिचय देते हुए उसकी चरित्रगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

अथवा

(ii) 'निर्मला' उपन्यास के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिये।

खण्ड-ह

5. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए- 7×1

(i) जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'गुण्डा' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा

(ii) कहानी तत्वों के आधार पर 'यही सच है' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।